

२६

439
Date of Receipt: 12/12/21
Hindustani Academy
Regd. No.
Date:
FILE No.

सुकवि-संकीर्तनः

संपादकः
श्रीदुलारेकाश भार्गव
(माधुरी-ग्रंथालय)

उत्तमोत्तम सुपाठ्य जीवनियाँ

| | | | |
|---|---------|---------------------------|------|
| अयोध्यासिंह उपाध्याय | १) | भारत के धर्मधर कावे | १०) |
| आदर्श चरितावली | १२) | भारत के प्रसिद्ध पुरुष | १०) |
| आदर्श महात्म्यागण | ११) | भारत के महापुरुष | ३) |
| आदर्श महिला | २) | भारत-रत्न | ११) |
| इंदुली के विधायक | | माना के लाल | ११) |
| महात्म्यागण | २१) | मुस्लिम महिला-रत्न २१) | ३) |
| कविता-कौमुदी (भा० १) २) | | गुरुप के प्रसिद्ध शिक्षण- | |
| २, ३ (भा० २) २) | | सुभारक | ११) |
| केशवचंद्र सेन | १३) | राज-रत्नमाला | |
| गोधा-सौरभ | ११), ३) | बंकिमचंद्र चटर्जी | १३) |
| नरिताष्टक | ११) | वास-व्यारतावली | ११) |
| जर्मनी के विधाता | १) | सच्चा स्त्रियाँ | ११) |
| द्विजेंद्रलाल राय | १) | मर्ता-वृत्तान्त | ११) |
| देवी-द्रौपदी | ११) | सम्राट् चंद्रगुप्त | १) |
| पुण्य-कीर्तन | १) | सिक्खों का इतिहास | २) |
| प्राचीन पंडित और कवि | १२) | सिक्ख गुरुओं की जीवनी | १) |
| भारत की देवियाँ | १) | हिंदी-कोशिका-नखमाला | |
| भारत की विदुषी महिलाएँ | ११) | " (भा० १) २) | |
| भारत के इस रत्न | १७) | " (भा० २) २) | |
| हिंदुस्थान-भर की समस्त हिंदी-पुस्तकों के मिलाने का एक-मात्र यत्न— | | | |

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२६-३०, अमोनाबाद-पाक, लखनऊ

गंगा-पुस्तकमाला का उन्तीसवाँ पुष्प

सुकवि-संकीर्तन

लेखक

महर्षीरामदास द्विवेदी

कविपयनिर्मेदवर्तिनि जन्मजगामरणविह्वले जगति ।
कल्पान्तकौटिबंधुः स्फुरति कवीनां यशःप्रसरम् ।

—ॐ—

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-आर्यालय

२६-३०, अमीन बाद-सार्क

लाहौर

प्रथमावृत्ति

संवि० १९११] सं० १२८१ वि० [सादी ११]

प्रकाशक

श्रीद्धोटेलाख भागवत बी० एस्-सी०, एल्-एल्० बी०

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

लखनऊ



मुद्रक

जीकेसरीदास सेठ

नवलकिशोर-प्रेस

लखनऊ

वक्तव्य

महामान्यवर पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी-लिखित 'सुकवि-संकीर्तन'-पुस्तक के साथ अपने प्रेमी पाठकों की सेवा में उपस्थित होते हुए आज इस परम हर्ष का अनुभव कर रहे हैं। हिंदी-संसार को माननीय द्विवेदीजी का परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। आधुनिक हिंदी-साहित्य के निर्माण में आपकी प्रभावशालिनी लेखनी ने बहुत बड़ा काम किया है। अंकज 'सरस्वती'-पत्रिका द्वारा हिंदी की जो स्तुर्य सेवा आपने की है, केवल उसी के कारण साहित्य के इतिहास में आपका नाम सदा स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा। अस्तु। समय-समय पर आपने सुकवियों, कविता-प्रेमियों और कवि-कोविदों के आश्रयदाताओं के संबंध में जो परिचयात्मक लेख लिखे थे, 'सुकवि-संकीर्तन' में उन्हीं का संग्रह है। आपकी लेखनी की सभी विशेषताएँ इन लेखों में मौजूद हैं। एक और सुंदर, सरल, सरस और मीढ़ गद्य का प्रमत्कार है, जो दूसरी ओर लेखक का अपूर्व अभ्यवसाय, स्पष्ट मानसिक विकास तथा बहुव्यापक ज्ञान प्रति पृष्ठ में प्रतिबिंबित है। इन मनोरंजक एवं शिक्षा-प्रद लेखों में जो बातें अर्पित हैं, वे कभी पुरानी नहीं हो सकतीं। इन्हें बार-बार पढ़ने पर भी जी नहीं ऊँच सकता। हमारा विश्वास है कि अन्य रचनाओं के समान ही द्विवेदीजी के इस 'सुकवि-संकीर्तन' का भी हिंदी-संसार में विशेष आदर होगा। तथास्तु।

निवेदन

जीवन-चरित्र कभी पुराने नहीं होते । जिस उद्देश से वे लिखे जाते हैं, बहुत समय बीत जाने पर भी, उसकी सिद्धि में अंतरास नहीं आता । विद्वानों और महात्माओं के चरित्र से कुछ-न-कुछ अच्छी शिक्षा अवश्य मिलती है; और समय ऐसी शिक्षा के प्रभाव को मलिन या कम नहीं कर सकता । फिर, संस्मरणीय महाजनों के जीवन-चरित्र लिखे जाने और प्रकाशित होने पर, यदि इधर-उधर बिखरे पड़े रहें, तो उन्हें प्राप्त करने में कठिनाई भी होती है । यही सोचकर कवियों की यह चरित्र-मालिका यहाँ, इस रूप में, प्रकाशित की जाती है । इसमें जो चरित्र हैं, वे लिखे जाने के समय के क्रमानुसार रखे गए हैं ।

“काव्य”-शब्द एक विशेष अर्थ में रूढ़ हो गया है । पर कवि बड़ी नहीं, जो कविता कहे । संस्कृत-भाषा के कोशकारों ने इस शब्द को विद्वान्मात्र का वाचक माना है । यथा—

विद्वान् विपश्चिदोपशः सन्तुष्टाः कोविदो बुधः ।

धीरो मनीषी हः प्राज्ञः संख्यावान् पंडितः कविः ।

इसी से, इस पुस्तक में, कई ऐसे भी कावियों के शब्दों को स्थान दिया गया है, जिन्होंने कविता नहीं लिखी, या लिखी भी है तो बहुत कम ।

इस चरित्र-माला से यदि पाठकों का धीरे-धीरे बड़ी मनोरंजन हो जा सके, तो भी इसके प्रकाशन का आभास बिल्कुल हो जायगा ।

जहाँ कहीं, कानपुर }
१२ अक्टूबर, १९२२ }

महावीरप्रसाद द्विवेदी

चरित-सूची



| नं० | नाम | लिखे जाने का समय | पृष्ठ |
|-----|---|------------------|-------|
| १. | महामहोपाध्याय पंडित दुर्गा- प्रसाद | मई १९०३ | १ |
| २. | वंग-कवि माइकेल मधुसूदनदास | जुलाई-अगस्त १९०३ | १६ |
| ३. | राजा रामपालसिंह | मई १९०४ | २३ |
| ४. | कविवर लछीराम | एप्रिल १९०२ | ७२ |
| ५. | पंडित बलदेवप्रसाद मिश्र | नवंबर १९०२ | ७३ |
| ६. | पंडित प्रतापनारायण मिश्र | मार्च १९०६ | ८३ |
| ७. | पंडित सरयूप्रसाद मिश्र | एप्रिल १९०८ | ११३ |
| ८. | महामहोपाध्याय साभंत श्रीचंद्रशेखरसिंह | जून १९०८ | १२३ |
| ९. | कविवर नवीनचंद्र सेन बी० ए० | एप्रिल १९०२ | १२५ |
| १०. | शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीविजयधर्मसूरि | जून १९११ | १४१ |
| ११. | पंडित विशननारायण दत्त | जनवरी १९१२ | १४१ |
| १२. | कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर | मार्च १९१२ | १४५ |
| १३. | लाला बलदेवदास | मई १९१६ | १४६ |